समाज को सही दिशा दिखाते हैं संत – प्रधानमंत्री

यह मेरा सौभाग्य है कि 12 साल में एक बार जो महापर्व होता है उसी कार्यकाल में प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का मेरे पास जुम्मा है और इसीलिए प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी के तहत उसी कालखंड में मुझे इस पवित्र अवसर पर आप सबके आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली महामस्तिकाभिषेक के अवसर पर यहां इतने आचार्य भगवंत, मुनि और माताजी के एक साथ दर्शन प्राप्त करना, उनके आशीर्वाद प्राप्त करना ये अपने आप में एक बहुत बड़ा सौभाग्य है।

जब भारत सरकार के पास यहां के धार्मिक यात्रियों की सुविधा के लिए कुछ प्रस्ताव आए थे, वैसे कुछ व्यवस्था ऐसी होती है कि आईकोलॉजी सर्वे डिपार्टमेंट को कुछ चीजें करने में दिक्कत होती है। कुछ ऐसे कानून और नियम बने होते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद भी भारत सरकार यहां पर आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए जितना भी कर सकती है जो-जो व्यवस्था खड़े करने की आवश्यकता होती है, उन सब में पूरी जिम्मेदारी के साथ अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया है और यह हमारे लिए बहुत ही संतोष की बात है। आज मुझे एक अस्पताल के लोकार्पण का भी अवसर मिला। बहुत लोगों की मान्यता यह है कि हमारे देश में धार्मिक प्रवृत्तियां तो बहुत होती है लेकिन सामाजिक प्रवृत्तियां कम होती है ये परसेप्शन सही नहीं है। भारत के संत-महंत, आचार्य, मुनि, भगवंत सब कोई जहां है जिस रूप में है, समाज के लिए कुछ ना कुछ भला करने के लिए कार्यरत रहते हैं। आज भी हमारी ऐसी महान संत परंपरा रही है कि 20-25 किलोमीटर के फासले पर यदि कोई भूखा इंसान है तो हमारी संत-परंपरा की व्यवस्था ऐसी है कि कहीं ना कहीं उसको पेट भरने का प्रबंध किसी ना किसी संत द्वारा चलता रहता है, कई सामाजिक काम, शिक्षा के क्षेत्र में काम, आरोग्य के क्षेत्र में काम, व्यक्तियों को नशा से मुक्त करने के काम, अनेक प्रवृत्तियां हमारी इस महान परंपरा में आज भी हमारे ऋषि मुनियों द्वारा उतना ही अथक प्रयास से चल रहे हैं।

आज जब गोम्टेश थूदी की ओर में नजर कर रहा था तो मुझे लगा कि मैं आज उसे आपके सामने उद्धत करूं।

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गंडं। आबाहु-दोलतं सुकण्णपासं ।।
गइंद-सुणडुज्जल-बाहुदण्डं। तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ।।

इसका मतलब होता है जिनकी देह आकाश के समान निर्मल है, जिनके कपोल जल के समान स्वच्छ हैं, जिनके कर्ण पल्लव स्कन्धों तक दोलायित हैं, जिनके दोनों उज्जवल भुजाएँ गजराज की सूंड के समान हैं, ऐसे उन गोमटेश स्वामी को मैं प्रतिदिन प्रणाम करता हूँ।

पूज्य स्वामी जी ने मुझ पर जितने आशीर्वाद बरसा सकते हैं, बरसाए। मेरी मां का भी स्मरण किया। मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूं इस आशीर्वाद को देने के लिए।

देश में समय बदलते हैं, समाज जीवन में बदलाव आने की परंपरा है। यह भारतीय समाज की विशेषता रहती है। समाज में जो कुरीतियां प्रवेश कर जाती हैं और कभी-कभी उसको आस्था का रुप दिया जाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी समाज व्यवस्था में से ही ऐसे सिद्ध पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे संत पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे मुनि पैदा होते हैं, ऐसे आचार्य भगवंत पैदा होते हैं, जो उस समय समाज को सही दिशा दिखाते हैं। उससे मुक्ति पाकर के जीवन जीने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

हर 12 वर्ष में मिलने वाला यह एक प्रकार से कुंभ का ही अवसर है। यहां सब मिलकर के सामाजिक चिंतन करते हैं, समाज को आगे 12 साल के लिए कहां ले जाना है, समाज को उस रास्ता को छोडकर इस रास्ते पर चलना है, क्योंकि हर कोने से संघ का, मुनि भगवंत, आचार्य, सब माताजी वहां के क्षेत्र का अनुभव लेकर आते हैं, चिंतन मनन होता है, विचार-विमर्श होता है और उसमें से समाज के लिए अमृत रूप कुछ चीजें हम लोगों को प्रसाद के रूप में प्राप्त होती है और जिसको हम लोग जीवन में उतारने के लिए भरसक प्रयास करते हैं।

आज बदलते हुए युग में भी यहां एक अस्पताल का मुझे लोकार्पण करने का अवसर मिला। इतने बड़े अवसर के साथ एक बहुत बड़ा सामाजिक कार्य। आपने देखा होगा इस बजट में हमारी सरकार ने एक बहुत बड़ा कदम उठाया आयुष्मान भारत। इस योजना के तहत कोई भी गरीब परिवार, उसके परिवार पर बीमारी आ जाए तो सिर्फ एक व्यक्ति बीमार नहीं होता है एक प्रकार से उस परिवार की दो तीन पीढ़ी बीमार हो जाती है क्योंकि इतना आर्थिक खर्च हो जाता है कि बच्चे भी नहीं चुका पाते और पूरा परिवार तबाह हो जाता है। एक बीमारी पूरे परिवार को खा जाती है। ऐसे समय समाज और सरकार, हम सबका दायित्व बनता है कि ऐसे परिवार को संकट के समय हम उसका हाथ पकड़ें, उसकी चिंता करें और इसीलिए भारत सरकार ने 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत एक साल में परिवार में कोई भी बीमार हो जाए, 1 वर्ष में रू. 5 लाख तक का उपचार का खर्चा, दवाई का खर्चा, ऑपरेशन का खर्चा, अस्पताल में रहने का खर्चा प्रबंध इंश्योरेंस के माध्यम से भारत सरकार करेगी। यह आजादी के बाद भारत में किया गया कदम पूरे विश्व में, पूरी दुनिया में सबसे बड़ा कदम है। इतना बड़ा कदम न कभी किसी ने उठाया है जो इस सरकार ने उठाया है। ये तभी संभव होता है कि जब हमारे शास्त्रों ने, हमारे ऋषियों ने, हमारे मुनियों ने उपदेश दिया- सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः और सर्वे सन्तु निरामयः इस संकल्प को पूरा करने के लिए एक-के-बाद एक कदम उठा रहे हैं।

इस अवसर पर पूज्य भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी ने प्रधानमंत्री जी का अभिनन्दन किया। परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ने प्रधानमंत्री को साहित्य प्रदान कर आशीर्वाद प्रदान किया। **संकलन – राजेन्द्र 'महावीर', सनावद**

वात्सल्यधारा आधार बैंक -

''एक बैंक जो पैसा नहीं, मरीजों को देता है मुफ्त मेडिकल उपकरण''

उपयोग खत्म होने के बाद मरीज इसे लौटा देते हैं, ताकि दूसरे मरीजों को मिल सके सुविधा

बैंक का नाम लेते ही पैसों का लेन-देन हमारी नजरों के सामने आ जाता है, लेकिन एक बैंक ऐसा भी हैं, जो दुर्घटना के कारण दिव्यांग या बीमार लोगों को 'मेडिकल कीट' देता है। वह भी पूरी तरह निःशुल्क। दो-तीन माह में ठीक होनें के बाद मरीज सामग्री बैंक को लौटा देता है, ताकि किसी जरूरतमंद के काम आ सके। इस अनोखे बैंक का नाम है 'वात्सल्यधारा आधार बैंक'। जैन मुनि पुलकसागर महाराज की प्रेरणा से देश का पहला 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' सन् 2012 में नागपुर में खुला। बैंक का संचालन अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच द्वारा किया जाता है। पिछले पांच साल में तीन हजार से अधिक लोग मेडिकल किट का लाभ उठा चुके हैं।

वात्सल्यधारा आधार बैंक के पास 10 व्हीलचेयर, 15 वॉकर, 4 मेडिकल बेड, 6 कमोड स्टूल, 10 एयरबेग तथा अन्य सामग्री है। सबसे ज्यादा मांग व्हीलचेयर, वॉकर, मेडिकल बेड और एयरबेग की होती है। घर पहुंच सुविधा भी प्रदान की जाती है।

व्हीलचेयर कारगर : व्हीलचेयर का लाभ वृद्ध मरीज उठा रहे हैं। मरीजों के लिए धूप सेंकना अनिवार्य है। वृद्ध मरीजों को घर से बाहर धूप में ले जाने के लिए व्हीलचेयर कारगर साबित हो रहा है। कई वृद्ध तीर्थयात्रा पर भी जा चुके है। **अस्पताल करते हैं संपर्क :** मेडिकल सहित अन्य अस्पताल वाले भी 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' में मेडिकल कीट के लिए संपर्क कर रहे हैं। आर्थोपेडिक विभाग वाले गरीब मरीजों को बैंक का नंबर देते हैं। जिन्हें आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा दी जाती है। **सभी के लिए खुले हैं बैंक के द्वार :** 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' के संयोजक मनोज बंड ने बताया कि बैंक द्वारा सामग्री सिर्फ जैन समाज के लिए नहीं, बल्कि हर जाति-धर्म के लोगों को सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। बैंक खुलने पर संस्था ने लोगों को आह्वान किया कि यदि आपके पास सामान हो, तो बैंक में जमा कराएं और जरूरत पड़ने पर लेकर जाएं। कुछ लोगों ने अपने घर से सामान लाकर दिया। कई लोगों ने अपने जन्मदिन पर सामग्री दान की। कुछ दिनों से डिपॉजिट ली जा रही है, लेकिन सामग्री वापस करने पर पूरी रकम लौटाई जाती है। मेरा हर नगर के जैन समाज से सादर निवेदन है कि वे इसी प्रकार का वात्सल्य धारा आधार बैंक प्रारंभ करें।

बरुआसगर के जैन विद्यालय को मिला अल्पसंख्यक का दर्जा

राजेश जैन, झांसी। गत 85 वर्षों से निरंतर चल रहे श्री पारसनाथ दिगंबर जैन संस्कृत विद्यालय बरुआसागर जनपद झांसी को भारत सरकार के अल्पसंख्यक विद्यालय शैक्षणिक आयोग ने अल्पसंख्यक का दर्जा प्रदान कर दिया है। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग में न्यायमूर्ति श्री बलजीत सिंह मान एवं न्यायमूर्ति नाहिद आबदी की खंडपीठ ने न्यायालय में विद्यालय के प्रबंधक श्री संजय जैन चौधरी और अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन झांसी की याचिका पर सुनवाई के बाद यह फैसला सुनाया। पिछले दिनों भारत सरकार के अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग में डिप्टी सेक्रेटरी श्री संदीप जैन ने नई दिल्ली स्थित अपने कार्यालय में विद्यालय के प्रबंधक श्री संजय जैन चौधरी और अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन को विद्यालय की अल्पसंख्यक मान्यता संबंधी प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार और बरुआसागर जैन समाज ने हर्ष व्यक्त किया है। स्थानीय समाज के साथ श्री प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार' के अथक प्रयासों से यह उपलब्धि प्राप्त हो पायी है। उल्लेखनीय है कि श्री पारसनाथ दिगंबर जैन संस्कृत विद्यालय बरुआसागर की स्थापना वर्ष 1933 में पूज्यपाद श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी की प्रेरणा से बरुआसागर की स्थानीय एवं बुंदेलखंड की जैन समाज के द्वारा की गई थी। वर्ष 1948 में श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा के समक्ष श्री वर्णी जी ने दीक्षा भी ली थी। यहां पर विद्यालय के साथ जैन समुदाय के छात्रों को एक निःशुल्क छात्रावास का संचालन जैन समाज के सहयोग से निरंतर हो रहा है। यह विद्यालय परिसर पूज्य वर्णी जी की धर्म साधना स्थली भी रहा है। वर्तमान में विद्यालय परम पूज्य मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज के आशीर्वाद से निरंतर प्रगति कर रहा है।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।